बाजी एक देखाऊं दूजी, जो खेलत हैं उजियारे।
भेख बनाए के नाचत सनमुख, एक ठाट लिए चारे।। १२ ।।

एक और दूसरा खेल दिखाती हूं जो धर्मों के ज्ञानी लोग जैसे चारों सनकादिक खेल रहे हैं। यह तरह-तरह के साधुओं के भेष बनाकर बड़े ठाट-बाट से चलते हैं और उनके सामने उनके सेवक नाचते-कूदते चलते हैं।

आतम विष्णु नाचत बुध सनतजी, गोकुल ग्रह्यो सिव मन।
करम सुकदेव नाचत नचवत, गावत प्रगट वचन।। १३ ।।

यहां संसार में विष्णु का जीव जगत की बुद्धि के मालिक ब्रह्मा के मानसी पुत्र सनत कुमार तथा गोकुल की लीला को अन्तःकरण में धारण करने वाले शिवजी तथा इन सब के संग जगत को कर्मकाण्ड के बन्धन में बांधकर शुकदेव मुनि भी अपने नियमों में बंधे नाच रहे हैं। इस बात को शास्त्रों में स्पष्ट कहा है।

ए सब खेल करत है मनुआ, भांत भांत रिझावे।
ब्रह्मवासना कोई पारथीं पेखे, सो भी दृष्ट मुरछावे।। १४ ।।

यह सारा खेल आदि नारायण जो सुपने में अव्यक्त का रूप है, तरह-तरह से बनाकर जीव को रिझाता है। परमधाम की ब्रह्मसृष्टि बैठे-बैठे परमधाम से देख रही है। उनकी भी नजर यहां धुंधली पड़ गई।

इस मनुए को कोई न पेहेचाने, जो तुम सकल मिलो संसार।
सब कोई देखे यामें मनुआ, या मनुआ में सब विस्तार।। १५ ।।

इस अव्याकृत के मन के स्वरूप नारायण को कोई नहीं पहचान सकता। चाहे सारा संसार भी क्यों न मिल जाए। सब कोई इस संसार में इस मन (नारायण) का ही विस्तार देखते हैं, क्योंकि यह मन ही सबके अन्दर व्यापक है (नारायण सबके अन्दर है)।

बोहोत पुकार करूं किस खातिर, ए सब सुपन सरूप।
बेहद बनज का होएगा साथी, सो एक लवे होसी टूक टूक।। १६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि यह सारा संसार सपने का ही रूप है। तो ज्यादा किसके लिए पुकार करूं। इस संसार में यदि कोई परमधाम की आत्मा होगी तो वह एक शब्द के सुनते ही जागृत हो जाएगी।

महामत ए सनमंधे पाइए, ऐसा अखंड सुख अपार।
गुर प्रसादें नाटक पेख्या, पाया मन मन का प्रकार।। १७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मूल परमधाम की निसबत से ही अखण्ड सुख की प्राप्ति होती है। हमने सतगुरु की कृपा से इस नाटक को देखा। सब जगह मन का रूप देखने को मिला। मन का मन क्या है भेद पाया, अर्थात् अक्षर का मन अव्यक्त और अव्याकृत का मन नारायण का पता चला।

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ६५ ॥

राग मारू

हो मेरी वासना, तुम चलो अगम के पार।
अगम पार अपार पार, तहां है तेरा करार।
तूं देख निज दरबार अपनों, सुरत एही संभार।। १ ।।

हे मेरी परमधाम की आत्माओ! तुम बेहद के पार परमधाम चलो। बेहद के पार अक्षर और अक्षर के पार अक्षरातीत धाम ही तुम्हारा घर है जहां तुम्हें करार (शान्ति) मिलेगी। हे आत्माओ! तुम अपने मूल घर परमधाम की तरफ ध्यान करो और अपनी सुरता को वहीं लगाओ।

Nijanand App

तूं कहा देखे इन खेल में, ए तो पड़यो सब प्रतिबिंब।
प्रपंच पांचो तत्व मिल, सब खेलत सुरत के संग।। २ ।।

हे आत्माओ! तुम संसार में क्या देख रही हो? यह तो सब नकल है। सपना है। यहां पर पांच तत्व से मिल करके यह झूठा ब्रह्माण्ड खड़ा है जिसमें सब जीव खेल रहे हैं।

यामें गुनी ग्यानी मुनी महंत, अगम कर कर गावें।
सुनें सीखें पढ़ें पंडित, पार कोई न पावें।। ३ ।।

इस संसार में गुणीजन, मुनिजन, पढ़े-लिखे ज्ञानी, साधु-महात्मा, आचार्यगण यही कहते हैं कि परमात्मा अगम है। वहां जाया नहीं जा सकता। यहां के पढ़े-लिखे पण्डित लोग भी आगे नहीं जा सके।

तूं देख दरसन पंथ पैंडे, करें किव सिध साध।
चढ़ी चौदे सुन्य समावें, तहां आड़ी अगम अगाध।। ४ ।।

हे मेरी आत्मा! तुम इन पंथ पैंडों के, धर्मों के ज्ञान को देखो। यहां पर साधु और साधक किस प्रकार मनगढंत कविता करते हैं। ज्ञान के द्वारा चौदह लोकों का वर्णन करते हैं फिर उस निराकार में ही समा जाते हैं, जिसका पारावार नहीं है।

ए भरम बाजी रची रामत, बहु विधें संसार।
ए जो नैन देखे श्रवन सुने, सब मूल बिना विस्तार।। ५ ।।

इस संसार में अनेक प्रकार से ऐसे छल से खेल रचा हुआ है। यहां जो कुछ नैनों से देख रहे हैं या कानों से सुन रहे हैं, सब निराधार है, बिना मूल का है।

वैराट सब हम देखिया, वैकुंठ विष्णु सेखसांई।
सुन्यथें जैसे जल बतासा, सो सुन्य मांझ समाई।। ६ ।।

हमने चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को देखा, जिसमें बैकुण्ठ से लेकर शेषशायी नारायण तक सभी जल के बताशा (बुलबुला) के समान निराकार से बने हैं और उसी में ही समा जाते हैं।

ए तूं देख नाटक निमख को, अब करे कहा विचार।
पाउ पल में उलंघ ले, ब्रह्मांड सुन्य निराकार।। ७ ।।

हे आत्मा! यह नाटक एक पल का है। इसे देखकर क्या विचार आता है? एक पल के चौथाई भाग के समय में ही इस शून्य निराकार के मण्डल को पार कर अपने घर परमधाम चली जा।

तेरे बीच बाट घाट न तत्व कोई, तूं करे पांउं बिना पंथ।
निरंजन के परे न्यारा, तहां है हमारा कंथ।। ८ ।।

तेरे घर जाने के रास्ते में किसी तरह की बाधा नहीं आने वाली है। तुझे बिना पैर के, अर्थात् बिना कोई कर्मकाण्ड किए निराकार के पार प्रेम लक्षणा मार्ग से चलना है जहां अपने धनी विराजमान हैं।

अब पार सुख क्यों प्रकासिए, ए है अपनों विलास।
महामत मनसा मिट गई, सब सुपन केरी आस।। ९ ।।

अब अपने अखण्ड घर के सुख को कैसे कहा जाए। यह अपने आनन्द करने का ठिकाना है। श्री महामतिजी कहते हैं कि इसकी पहचान कर लेने से स्वप्न की सब चाहना ही मिट गई।

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ ७४ ॥

Nijanand App